मैंने कहा — कहाँ रहे?

बोले — बाजार को देखते रहे।

मैंने पूछा — बाजार को देखते क्या रहे?

बोले — क्यों? बाजार!

तब मैंने पूछा — लाए तो कुछ भी नहीं!

बोले — हाँ, लेकिन यह समझ न आता था कि न लूँ तो क्या? सभी कुछ तो लेने को मन होता था। कुछ लेने का मतलब था बाकी सब-कुछ को छोड़ देना। लेकिन मैं कुछ भी नहीं छोड़ना चाहता था। इसलिए मैं कुछ भी नहीं ले सका।

मैंने कहा — बहुत खूब!

किंतु मित्र की बात ठीक थी। अगर तुम्हें ठीक पता नहीं है कि क्या चाहते हो तो सब ओर की चाह तुम्हें घेर लेगी। और तब परिणाम त्रास ही होगा, न गति होगी, न कर्म।

बाजार में एक जादू है जो आँख की तरह काम करता है। यह रूप का जादू है लेकिन जैसे चुंबक का जादू सिर्फ लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी अपनी मर्यादा है। यदि जेब भरी हो, और मन खाली हो, तो ऐसी स्थिति में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली लेकिन मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की बहुत-सी चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त अगर जेब भरी हुई तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मन होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान बहुत जरूरी तथा आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। लेकिन यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि मालूम पड़ता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि बाधा ही डालती है। थोड़ी देर के लिए स्वाभिमान को जरूर सेंक मिल जाता है लेकिन इससे अभिमान की गिल्टी को और खुराक ही मिलती है। अगर जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह जकड़ कम होगी?

परंतु उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा-सा उपाय यह है कि बाजार जाओ तो मन खाली न हो। मन खाली हो, तब बाजार न जाओ। कहते हैं आप लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए। पानी भीतर हो तो लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन में यदि लक्ष्य भरा हो तो बाजार भी फैला-का-फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिलकुल भी नहीं दे सकेगा, बल्कि थोड़ा बहुत आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे अवश्य कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ-न-कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की वास्तविक कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना।

यहाँ एक अंतर चिह्न लेना बहुत आवश्यक है। मन पूर्णतः खाली नहीं रहना चाहिए, इसका अर्थ यह नहीं कि वह मन एकदम बंद रहना चाहिए, जो मन बंद हो जाएगा, वह तो शून्य हो जाएगा। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव से पूर्ण है। शेष सब अपूर्ण ही है। इससे मन कभी बंद नहीं रह सकता। सभी इच्छाओं का निरोध कर लोगे, यह झूठ है और यदि 'इच्छानिरोधस्तपः' का ऐसा ही नकारात्मक अर्थ हो तो वह तप झूठ है। वैसे तप की राह रेगिस्तान को ही जाती होगी, वह मोक्ष की राह नहीं है। मन को ठाठ देकर बंद रखना जड़ता है। लोभ को जीतना यह नहीं है कि जहाँ लोभ होता है, यानी मन में, वहाँ नकार हो। यह तो लोभ की ही जीत है तथा मनुष्य की हार। यदि अपनी आँख फोड़ कर लोभनीय के दर्शन से बचे तो क्या हुआ? ऐसे क्या

मैंने कहा — कहाँ रहे?

बोले — बाज़ार को देखते रहे।

मैंने पूछा — बाज़ार को देखते क्या रहे?

बोले — क्यों? बाज़ार!

तब मैंने पूछा — लाए तो कुछ भी नहीं!

बोले — हाँ, लेकिन यह समझ न आता था कि न लूँ तो क्या? सभी कुछ तो लेने को मन होता था। कुछ लेने का मतलब था बाकी सब कुछ को छोड़ देना। लेकिन मैं कुछ भी नहीं छोड़ना चाहता था। इसलिए मैं कुछ भी नहीं ले सका।

मैंने कहा — बहुत खूब!

किंतु मित्र की बात ठीक थी। अगर तुम्हें ठीक पता नहीं है कि क्या चाहते हो तो सब ओर की चाह तुम्हें घेर लेगी। और तब परिणाम केवल त्रास ही होगा, न गति होगी, न कर्म।

बाज़ार में एक जादू है जो आँख की तरह काम करता है। वह रूप का जादू है लेकिन जैसे चुंबक का जादू सिर्फ़ लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी अपनी मर्यादा है। यदि जेब भरी हो, और मन खाली हो, तो ऐसी स्थिति में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली लेकिन मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की बहुत-सी चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त अगर जेब भरी हुई तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मन होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान बहुत ज़रूरी तथा आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। लेकिन यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि मालूम पड़ता है कि फ़ैंसी चीज़ों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि बाधा ही डालती है। थोड़ी देर के लिए, स्वाभिमान को ज़रूर सेंक मिल जाता है लेकिन इससे अभिमान की गिल्टी को और खुराक ही मिलती है। अगर जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह जकड़ कम होगी?

परंतु उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा-सा उपाय यह है कि बाज़ार जाओ तो मन खाली न हो। मन खाली हो, तब बाज़ार न जाओ। कहते हैं अगर लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए। पानी भीतर हो तो लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन में यदि लक्ष्य भरा हो तो बाज़ार भी फैला-का-फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिलकुल भी नहीं दे सकेगा, बल्कि थोड़ा बहुत आनंद ही देगा। तब बाज़ार तुमसे अवश्य कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ-न-कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाज़ार की वास्तविक कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना।

यहाँ एक अंतर चीन्ह लेना बहुत आवश्यक है। मन पूर्णतः खाली नहीं रहना चाहिए, इसका अर्थ यह नहीं कि वह मन एकदम बंद रहना चाहिए। जो मन बंद हो जाएगा, वह तो शून्य हो जाएगा। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव से पूर्ण है। शेष सब अपूर्ण ही है। इससे मन कभी बंद नहीं रह सकता। सभी इच्छाओं का निरोध कर लोगे, यह झूठ है और यदि 'इच्छानिरोधस्तपः' का ऐसा ही नकारात्मक अर्थ हो तो वह तप भी झूठ है। वैसे तप की राह रेगिस्तान को ही जाती होगी, वह मोक्ष की राह नहीं है। मन को ठाठ देकर बंद कर रखना जड़ता है। लोभ को जीतना यह नहीं है कि जहाँ लोभ होता है, यानी मन में, वहाँ नकार हो! यह तो लोभ की ही जीत है तथा मनुष्य की हार। यदि अपनी आँख फोड़ कर लोभनीय के दर्शन से बचे तो क्या हुआ? ऐसे क्या

Scanned with CamScanner